जड़ी भूत ढांचे से लड़ेंगे

जड़ी भूत ढांचे से जरूर लड़ेंगे हम
चाहे प्रतिनिधि तुम
चाहे प्रतिनिधि मैं

वैचारिक इंजनों के डीजल को तोड़ेंगे
उड़न्त घोड़ों-से जरूर हम लड़ेंगे
चाहे प्रतिनिधि तुम
चाहे प्रतिनिधि मैं

द्वन्द्व में हार जाऊं यदि मैं
तुम मेरे घर जाना
बच्चे पुचकारना
तुम्हारी भाभी को
आखिरी मेरी बात कहना-
स्वयं के पैरों पर खड़ी होकर जीना
द्वन्द्व में हार जाओ
मर जाओ यदि तुम
अशोक-वृक्ष से उनको
पारिजात-तरु से उनको
हृदय का जल देकर
रक्त देकर उन्हें मैं जिलाऊंगा
'उन्हें' मैं हृदय दूंगा प्राण पिलाऊंगा।
डरो नहीं डरो नहीं द्वन्द्व में जूझ लो।

इतिहास-प्रक्रिया से कोई नहीं बचा है
तुम्हारी व मेरी खूब
गहरी हिस्सेदारी है
निभायेंगे निभायेंगे अपना रोल हम
अपनी-अपनी भूमिका
शायद है कि तुम मेरे पास आओ
द्वन्द्व में रह जाओ मेरी हो
एक इसी आशा में
तुम्हारे व मेरे बीच स्नेह है
तुम्हारा व मेरा क्या
हमारा यह एक ही तो वतन है
एक ही तो गंगा है एक ही तो गेह है।

-गजानन माधव मुक्तिबोध

ब्राह्मणवाद क्या है ?

एक भाई ने मुझसे पूछा है ब्राह्मणवाद का क्या अर्थ है ? मैं भी ब्राहमण हूँ इसलिये जानना चाहता हूँ ?

उस भाई की जिज्ञासा के प्रश्न का उत्तर अपनी समझ से देने की कोशिश कर रहा हूँ।

भारत का समाज जातियों में बंटा हुआ समाज है ।

भारत में जाति व्यवस्था ने आबादी के बड़े हिस्से को हीन और नीच घोषित किया,

मनु द्वारा घोषित नियम के अनुसार इस नीच घोषित किये गये आबादी के हिस्से की ज़मीने छीन ली गईं, आबादी के इस हिस्से पर धन कमाने की मनाही थोपी गई, आबादी के इस हिस्से को राजनैतिक तौर पर कमज़ोर रखा गया।

यानी आज के दलितो को एक घोषित विधान के अनुसार गरीब , कमज़ोर और नीचा बनाया गया। आबादी के बड़े हिस्से को नीच घोषित करने का काम किया सनातन धर्म ने।

सनातन धर्म का विधान बनाया वेद , शास्त्र और पुराण लिखने वाले बाह्मणों ने, तो जाति प्रथा का निर्माण किया ब्राह्मणों ने , तो ब्राह्मणवाद यानि जाति प्रथा,

आज भी ब्राह्मणों द्वारा रचित सनातन धर्म को ही बढ़ाया जा रहा है, भारत की राजनीति भी सनातन धर्म के प्रतीकों की रक्षा के नाम पर चल रही है । राम मन्दिर , भारतीय संस्कृति, जो असल में ब्राह्मणवादी संस्कृति है , की रक्षा का संकल्प के नाम पर चुनाव जीते जा रहे हैं। इसलिये आज शूद्र और दलित जातियाँ कहती हैं कि उनकी लड़ाई ब्राह्मण वाद के विरुद्ध है।

अर्थात ब्राह्मणों द्वारा जिन करोड़ों लोगों को नीच , हीन और गरीब बनाया गया । वह खुद को हीन घोषित करने वाले नियम और वाद से मुक्ति चाहते हैं ।

तो यह बात बिल्कुल जायज़ बात है ?

खुद को बुरी स्थिति मे ले जाने वाली व्यवस्था से विद्रोह करना और उस व्यवस्था का नाश करना ,

हर मनुष्य का नैसर्गिक कर्तव्य है ,

इसलिये करोड़ों इंसानों को बुरी स्थिति में धकेलने वाले ब्राह्मणवादी कानूनों का नाश करने की कोशिश करना , हर न्यायप्रिय व्यक्ति का कर्तव्य होना चाहिये । इसलिये अगर आज कोई व्यक्ति ब्राहमणवाद का समर्थन करता है तो इसका अर्थ है वह करोड़ों लोगों को नीच घोषित करने को सही कह रहा है।

और यदि आज के दौर मे कोई करोड़ों लोगों को नीच घोषित करने का समर्थन कर रहा है, तो वह लोकतन्त्र, संविधान , कानून , नैतिकता, मनुष्यता के विरुद्ध बात कर रहा है। इसके अलावा भारत मे ब्राह्मणों द्वारा पूर्व में नीच घोषित किये गये करोड़ों लोग आज भी व्यापार, प्रशासन, शासन, न्यायिक सेवा, विश्वविद्यालयों के उच्च पदों पर आरक्षण के बावजूद नहीं पहुंच पा रहे हैं । इसका यह कारण नहीं है कि यह दलित योग्य नहीं है । बल्कि इसका कारण यह है कि सैंकड़ों सालों से ऊंचे पदों पर कब्ज़ा किये बैठे ताकतवर ब्राह्मणों का वर्ग इन दलितों से आज भी नफरत करता है और इन दलितों को इन पदों से दूर रखने की कोशिशें करता रहता है ?

इस तरह दलित युवा मानता है कि उसे हीन हालात से निकलने देने में ब्राह्मणवाद और ब्राह्मण वर्ग बाधा है।

देश मे सामाजिक न्याय के पक्षधर भी मानते हैं कि ब्राह्मणवाद द्वारा रचित जातिवाद एक न्यायप्रिय समरस बनाने मे बाधा है। इसलिये सभी न्यायप्रिय लोग ब्राह्मणवाद के खात्मे के पक्ष मे हैं, इसके अलावा ब्राह्मणवाद द्वारा निर्मित जातिवाद चूंकि यह मानता है कि जाति जन्म से मिलती है और जाति कभी बदल नहीं सकती।

ब्राह्मणवाद मानता है व्यक्ति जिस जाति मे जन्म लेता है , वह उसी जाति मे मरता है, इसलिये ब्राह्मणवाद के नाश का अर्थ है, जाति को जन्म से जोड़ने वाले धर्म का नाश, इसलिये जो ब्राहमण जाति के व्यक्ति जाति व्यवस्था और ब्राह्मणवाद के नाश के द्वारा सामाजिक न्याय के लिये कोशिश कर रहे हैं। ऐसे लोगों को ब्राहमण मान कर उनसे नफरत करना भी ब्राह्मणवाद है। ज्ञान को श्रम से श्रेष्ठ मानना ब्राह्मणवाद है। यह मानना कि शरीर से श्रम करने वाला हीन होता है, और बुद्धि से काम करने वाला उच्च होता है, भी ब्राह्मणवाद है। यह मानना कि अंग्रेजी जानने वाले, ऊँची शिक्षा पा गये लोग , शहरों में रहने वाले लोग श्रेष्ठ हैं, यह मानना कि अंग्रेज़ी ना जानने वाले, ऊंची शिक्षा ना प्राप्त लोग , गांव के लोग हीन है, भी ब्राहमणवाद है। ब्राह्मण जाति के अलावा, अन्य जाति मे पैदा होने के बावजूद इंसानों को जन्म के स्थान, शिक्षा और आर्थिक स्थिति के आधार पर हीन या श्रेष्ठ मानने वाला व्यक्ति भी ब्राहमणवादी है।

भारत का सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक बदलाव ब्राह्मणवाद के नाश के बिना संभव ही नहीं है।

- हिमांशु कुमार

बहुत कुछ सड़ रहा है छत्तीसगढ़ में

(दुनिया के सब से चर्चित अर्थशास्त्रियों में गिने जाने वाले ज्यां द्रेज बेल्जियम में जन्मे , लेकिन पिछले सैंतीस सालों से भारतीय नागरिक हैं। उन्हें अन्य कामों के अलावा मनरेगा की संकल्पना के लिए जाना जाता है। अगर ऐसे व्यक्ति को ऐसी चिट्ठी लिखनी पड़ रही है तो जान लीजिए, कहीं भीतर बहुत कुछ सड़ रहा है और सडांध हमारी कल्पना से ज़्यादा गहराई तक समा चुकी है। वरिष्ठ अर्थशास्त्री ज्यां द्रेज़ ने यह पत्र छत्तीसगढ़ के जगदलपुर में रह रही अपनी सहयोगी बेला भाटिया पर हो रहे हमले और खुद को विदेशी दलाल और नक्सली बताए जाने की घटना के जवाब में लिखा है)।

कल यह सुनकर दंग रह गया कि कुछ लोग जगदलपुर के नजदीक रह रही मेरी सहोयगी बेला भाटिया के निवास के पास जमा हुए और पड़ोसियों को उनके खिलाफ भड़काने लगे। एकदम फिल्मी तर्ज पर इन लोगों ने उनके घर के नजदीक ही प्रदर्शन किया और बेला भाटिया मुर्दाबाद तथा बेला भाटिया बस्तर छोड़ो जैसे नारे लगाये। इन लोगों ने एक पर्चा भी बांटा जिसमें हम दोनों के बारे लिखा था कि ये दोनों नक्सलवादी हैं और देश को तोड़ना चाहते हैं. प्रदर्शनकारियों में से कुछ ने बेला की मकान मालकिन से उसे निकाल बाहर करने को कहा. सौभाग्य से, बेला के पड़ोसी और मकान-मालकिन उसकी बहुत कद्र करते हैं और उन्होंने प्रदर्शनकारियों को तवज्जो नहीं दी.

जो कोई बेला और मुझे नक्लसलवादी मानता है वह निश्चित ही सच्चाई से कोसों दूर है। स्थानीय मीडिया (कैच न्यूज में भी) में प्रकाशित एक बयान में बेला इन आरोपों को खारिज करते हुए बस्तर के अपने काम की प्रकृति के बारे में स्पष्ट कर चुकी हैं। मेरे खुद के विचार और काम भी एक खुली किताब की तरह हैं। अगर प्रदर्शनकारियों ने इन बातों को जानने खोजने की जहमत उठायी होती तो वे ऐसा आरोप लगाने से पहले कई दफा सोचते।

मैं रांची विश्वविद्यालय और दिल्ली स्कूल ऑफ इकॉनॉमिक्स से जुड़ा हूं और विकासपरक मुद्दों पर एक अर्थशास्त्री के तौर पर काम करता हूं। मैं रांची में रहता हूं और समय-समय पर बेला से मिलने बस्तर आता रहता हूं। मेरा ज्यादातर काम भुखमरी, गरीबी, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा सामाजिक नीति के अन्य पहलुओं पर है। मैं अमर्त्य सेन, एंगस डीटॉन, निकोलस स्टर्न और अन्य अर्थशास्त्रियों का घनिष्ठ सहकर्मी हूं और अगर मैं नक्सलवादी हूं तो इन्हें भी छत्तीसगढ़ स्पेशल पब्लिक एक्ट के तहत जेल भेजा जाना चाहिए।

जिस किसी ने मेरा लेखन देखा है वह जानता है कि मैं सशस्त्र संघर्ष का समर्थन नहीं करता हालांकि लोकतांत्रिक साधनों के जरिए अन्याय के सभी रुपों के प्रतिकार का मैं समर्थक हूं। मैंने बचपन में युद्ध की भयावहता के बारे में सुना था और तभी से मैं शांति-समर्थक कार्यकर्ता हूं। मैं न तो नक्सलवादी हिंसा का समर्थन करता हूं और ना ही राज्यसत्ता द्वारा की जाने वाली हिंसा का। माओवादी हिंसा में मैंने खुद अपने मित्र को गंवाने का दुःख उठाया है। झारखंड में भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ने वाले मेरे साहसी मित्र नियामत अंसारी को माओवादी दस्ते ने कुछ साल पहले बड़ी बेरहमी से मार डाला था।

ऊपर जिस पर्चे का जिक्र आया है उसमें मुझे 'विदेशी दलाल' बताया गया है। सच्चाई यह है कि मैं भारतीय नागरिक हूं और कल जो लोग यह पर्चा बांट रहे थे, उनमें से कइयों की तुलना में मैंने भारत में कहीं ज्यादा वक्त बिताया है। मैं इस देश से प्यार करता हूं जहां कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक मेरे मित्र हैं। सिवाय कल के दिन के भारत में सैंतीस सालों से रहते हुए मुझे कभी शत्रुतापूर्ण बर्ताव का सामना नहीं करना पड़ा है।

मुझे 'विदेशी दलाल' बताया गया है. सच्चाई यह है कि मैं भारतीय नागरिक हूं नक्सलवादी होने का आरोप एक बहाना भर है। बेला को परेशान करने की असली वजह यह है कि उन्होंने कुछ हफ्ते पहले सुरक्षाबल के कुछ सदस्यों के खिलाफ बलात्कार और यौन-हिंसा की शिकायत दर्ज कराने में बीजापुर जिले की कुछ आदिवासी महिलाओं की मदद की थी। इसके बाद से ही पुलिस-प्रायोजित सामाजिक एकता मंच जैसे समूहों ने बेला को निशाना बनाना शुरु कर दिया। बस्तर के लोगों ने तो अपनी तरफ से बेला का, वह जहां भी गई है, स्वागत ही किया है और उसके काम का समर्थन किया है।

कल का प्रदर्शन धमकाने का आपराधिक कृत्य है। यह बहुत अनैतिक भी है। बस्तर जैसी जगह में किसी पर नक्सलवादी होने का आरोप मढ़ना उसकी जान खतरे में डालने के बराबर है। नक्सलवादी को निंदा का पात्र समझकर उसे निशाने पर लेने वाला कोई भी व्यक्ति ऐसे आरोप के आधार पर बेला को नुकसान पहुंचा सकता है।

मुझे विश्वास है कि बस्तर के नेकदिल लोग बेला की सुरक्षा में मदद करेंगे।

ज्यां द्रेज
जगदलपुर, 27 मार्च 2016

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें:

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. **आनंद मैगजीन सैंटर केसी रोड, एनएच-5,**
2. **प्रिंट फोर्ट टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड,**
3. **रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन,**
4. **रैंक, 45 नीलम चौक,**
5. **एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे,**
6. **राम खिलावन बल्लभगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने,**
7. **हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास ।**
8. **जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207**
9. **स्थानीय अदालतों में : चैम्बर नं. 56-एस.के .जोशी - वकील साहब**